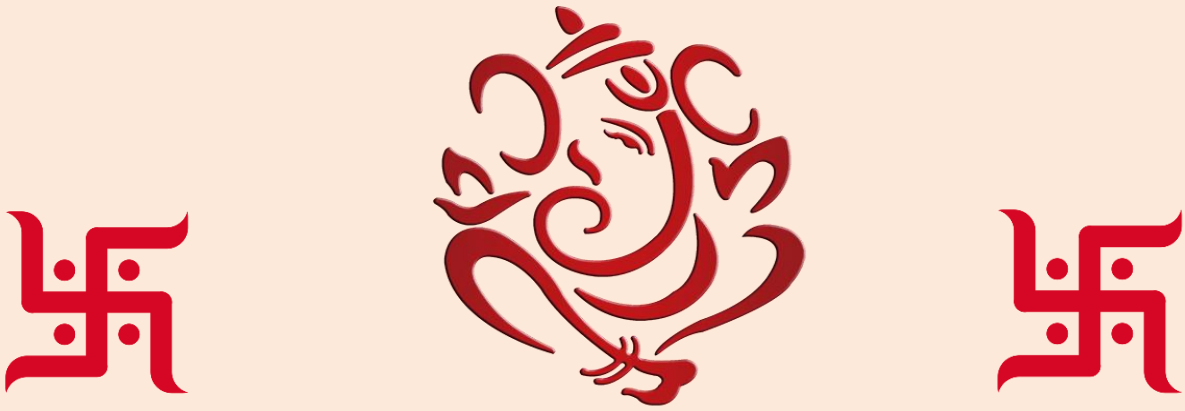

|| हिंदी भाषा का विश्वस्तरीय ऑनलाइन ज्योतिष पोर्टल ||

विश्व प्रसिद्ध एस्ट्रोलॉजर द्वारा प्रदत्त **ज्योतिष** परामर्श

Website : https://JyotishShastra.com
Email : care@jyotishshastra.com
Horoscope Web Link : https://JyotishShastra.com/horoscope
WhatsApp Direct Link : https://wa.me/919520039039

हॉरोस्कोप फॉर्म विवरण :-

NAME :	Amit Patel	GENDER :	Male
DATE OF BIRTH :	01 / 11 / 1978	TIME OF BIRTH :	11:33:00 AM
CITY :	Birsinghpur	STATE :	Madhya Pradesh
COUNTRY :	India	LANGUAGE :	Hindi
PROCEDURE :	Vedic Parashar	SERVICE NAME :	Wealth, Finance, Prosperity & Money Making Report
QUESTION(S) :	जीवन में मेरे पास धन दौलत संपत्ति का योग हैं भी अथवा नहीं? अथवा हैं तो कितनी मात्रा में हैं? धन हानि व लाभ कितना व कब होगा? पैतृक संपत्ति मिलेगी अथवा नहीं? कुंडली में पैतृक संपत्ति प्राप्ति योग हैं अथवा नहीं?		
Mobile No. : 9893317178		Email ID : mitpatel28@yahoo.com	
ORDER ID : #1059	PAYMENT ID : 250617829	AMOUNT : ₹395	
Order Date : 05/06/2019		Delivery Date : 10/06/2019	

लग्न, राशि एवं ईष्ट :-

लग्न :	धनु
चंद्र राशि :	तुला
ईष्ट देव :	हनुमानजी

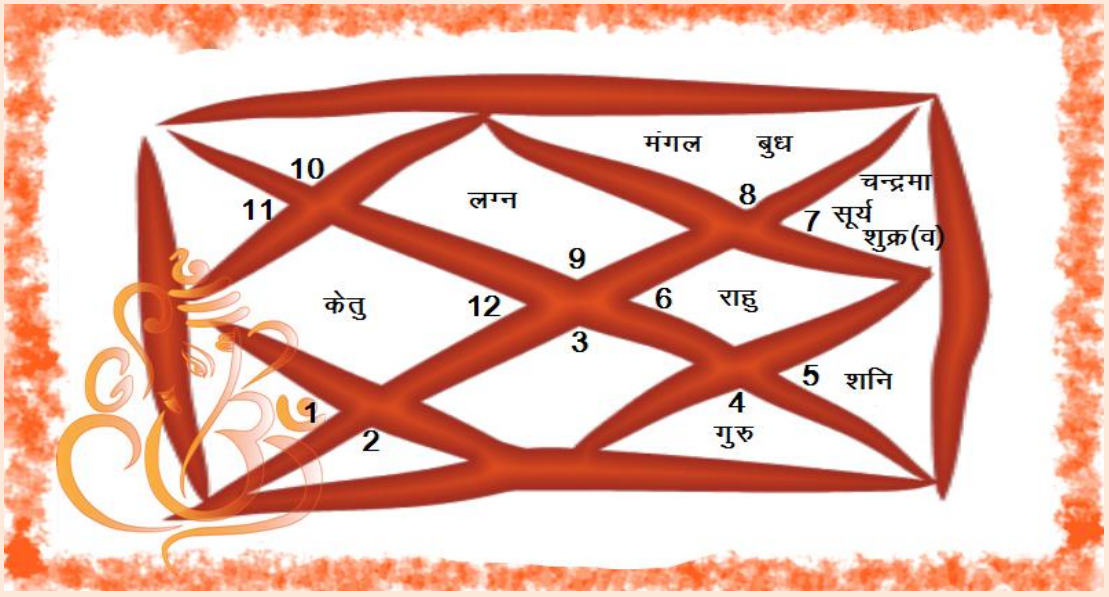

ॐ श्री गणेशाय नमः

कुंडली फलादेश :

श्रीमान अमित पटेल जी आपकी लग्न कुंडली में द्वितीय भाव अर्थात धन भाव एवं कुटुंब भाव में मकर राशि स्थित है जिसका स्वामी शनि ग्रह नवम भाव अर्थात भाग्य भाव में स्थित है | शनि की तीसरी दृष्टि एकादश भाव पर पड़ रही है जिस कारण धन भाव (द्वितीय भाव) एवं लाभ भाव (एकादश भाव) के बीच परस्पर सम्बन्ध तो बन रहा है किन्तु भाग्य भाव के माध्यम से | कुंडली में धन की स्थिति हेतु द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के बीच परस्पर सम्बन्ध होना आवश्यक होता है | आपकी कुंडली में शनि भाग्य भाव में अपने शत्रु ग्रह सूर्य की राशि में स्थित हैं जिस कारण कड़ी मेहनत के उपरान्त भी धन प्राप्ति सम्बंधित अपेक्षित परिणाम आपको नहीं मिल पा रहे हैं | भाग्य का साथ आपको नहीं मिल रहा है | बृहस्पति की सप्तम दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति को संभाले हुए हैं |

धन प्राप्ति हेतु आपको कड़ी मेहनत के साथ साथ भाग्य का भी सहारा चाहिए | जिसके लिए सूर्य देव को प्रसन्न करना होगा चूँकि भाग्य भाव के स्वामी सूर्य देव आपकी कुंडली में लाभ भाव में चन्द्रमा व वक्री शुक्र के साथ अपनी नीच राशि तुला में स्थित हैं | जिस कारण वहां आय के साधनो में रूकावट डाल रहे हैं साथ ही सूर्य के कारण चन्द्रमा भी अस्त है जिस कारण चन्द्रमा का वह प्रभाव जो आपको प्राप्त होना चाहिए नहीं प्राप्त हो रहा है अर्थात चन्द्रमा के अस्त होने के कारण आय के साधनो में अर्थात व्यवसाय में आपका मन भटक रहा है व आप सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं हो पाते हैं | आपके गलत निर्णयों के कारण आपको धन हानि होती है | ज्योतिष में पिता को सूर्य देव का प्रतीक माना गया है | अतः यदि धन प्राप्ति चाहते हैं तो पिता की सेवा करें | पिता की अनुपस्थति में घर के किसी बड़े बुजुर्ग की सेवा करें उनके दिशा निर्देशन में अपने कार्य करें अर्थात उनसे पूछकर ही धन-आय-व्यवसाय सम्बंधित कोई कार्य सम्पादित करें |

एकादश भाव में शुक्र ग्रह वक्री होकर अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्थित है जो शुक्र को बलवान बनाता है किन्तु सूर्य षष्टम भाव का स्वामी भी है जो की रोग ऋण शत्रु विवाद का भी कारक भाव है | व्यय-हानि के भाव (द्वादश भाव) में स्थित मंगल व बुध की दृष्टि षष्टम भाव पर पड़ रही है | एकादश भाव में शुक्र के साथ, अपनी नीच राशिगत सूर्य व उससे अस्त चन्द्रमा भी स्थित हैं जिस कारण मन की अस्थिरता, गलत निर्णय, अनिर्णय व क्रोधवश, खिन्नतावश, शत्रुतावश उत्पन्न मनमुटाव के कारण धन हानि व व्यवसाय में हानि होती है | अर्जित व संचित धन, रोग-ऋण-विवाद में खर्च होता है ऐसा कुंडली में ग्रहों की स्थिति दर्शा रही है |

अतः जब जब आप व्यवसाय सम्बंधित कार्यों में क्रोध करेंगे, धन व्यवसाय सम्बंधित निर्णय मनमर्जी से जल्दबाजी में स्वमं के विवेक से लेंगे आपको धन व संपत्ति की हानि होगी |

पैतृक संपत्ति प्राप्ति की संभावना हेतु कुंडली के द्वितीय, चतुर्थ एवं अष्टम भाव में परस्पर सम्बन्ध होना चाहिए | आपकी कुंडली में अष्टम भाव में बृहस्पति ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित है | बृहस्पति की सप्तम दृष्टि द्वितीय भाव पर पड़ रही है | चतुर्थ भाव अर्थात सुख भाव भवन भूमि माता के भाव का स्वामी भी

बृहस्पति ग्रह है | चतुर्थ भाव पर भी बृहस्पति की नवम दृष्टि पड़ रही है | द्वितीय भाव का नवम भाव से भी सम्बन्ध बन रहा है | द्वितीय भाव का स्वामी शनि नवम भाव अर्थात भाग्य भाव में स्थित है | इस कारण आपको पैतृक संपत्ति तो अवश्य ही मिलेगी किन्तु कुछ कठिनाइयों के पश्चात | मुक़दमेबाज़ी हो इसकी संभावना है | घर के बड़े, बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करें उन्हें प्रसन्न रखने का पुरजोर प्रयत्न करें | भाई बहनो से प्रेम पूर्ण सम्बन्ध रखें उन्हें प्रसन्न रखें | यदि आप सूर्य देव को बलवान करें तो सरलता से प्राप्ति होने की संभावना प्रबलित होगी |

आप वर्तमान समय में अपने आप को दिशाहीन अवस्था में पाते हैं | मन में अत्यधिक उलझने हैं | बुद्धि साथ नहीं दे रही, क्या करूँ? क्या नहीं? इसका निर्णय लेने में स्वमं को असमर्थ पा रहे हैं | जनवरी 2020 तक आपको अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो जायेगा | आपको जीवन में किस पथ पर जाना है आपकी कुंडली के ग्रह आपको इसका संकेत दे देंगे | मन की शांति हेतु आप इस समय आध्यात्म की ओर अपना मन लगाएं |

आपको शुक्र ग्रह की महादशा जो 16 अगस्त 2037 से प्रारम्भ होगी में समस्त प्रकार के सुख, धन व शांति प्राप्त होगी |

जीवन में आपके पास धन संपत्ति के योग हैं | आवश्यकता अनुसार धन आपके पास सदैव उपलब्ध रहेगा | किसी चीज की कमी कभी नहीं होगी | हां जो आप किसी चीज की प्राप्ति अथवा उसकी उपलब्धता में आदतन बेहिसाब होने की आशा अपेक्षा रखते हैं, उतना अधिक धन नहीं होगा | हाँ, 2037 के पश्चात शुक्र ग्रह की महादशा में आप यह एक्सपेक्ट कर सकते हैं |

मन की शांति के लिए आपको चाहिए की आप अपनी तीव्रगामी व बेहिसाब इच्छाओं आकांक्षाओं पर अंकुश लगाएं | आपका जीवन व आर्थिक स्थितियां इतनी बुरी नहीं हैं जितना की आपने उन्हें बना रखा है | आत्मचिंतन करें आप वास्तिकता को स्वमं ही समझ जायेंगे | आध्यात्म की ओर जाएँ | दूसरों की निःस्वार्थ सेवा करें | पत्नी पर अकारण हावी होने का प्रयास न किया करें उनके मन के भाव भी सुने, प्रेमपूर्ण व्यवहार रखें व शान्ति से समस्याओं का निपटारा करें | आप अपनी व्यवहारकुशलता से घर अथवा बाहर की छोटी अथवा बड़ी किसी भी प्रकार की समस्या से निबटने में दक्ष हैं, किन्तु आप ऐसा करने का प्रयास नहीं करते हैं, आप समस्याओं को दबंगई से निबटाने का प्रयास करते हैं जिस कारण आपको धन, मान सम्मान व शांति की हानि होती है | सभी से निष्कपट निःस्वार्थ प्रेमपूर्ण व्यवहार रखें |

समयवार धन प्राप्ति, हानि एवं कार्य सिद्धि योग :-

17.04.2019 से 09.09.2019 तक धन प्राप्ति योग है |

10.09.2019 से 24.11.2019 तक अशुभ योग है |

25.11.2019 से 20.12.2019 तक धन प्राप्ति योग है |

21.12.2019 से 04.04.2020 तक धन हानि योग है |

05.04.2020 से 23.05.2020 तक कार्य सिद्धि योग है |

24.05.2020 से 06.07.2020 तक धन मान हानि योग है |

07.07.2020 से 22.04.2021 तक धन प्राप्ति व कार्य सिद्धि योग है |

23.04.2021 से 13.07.2021 तक हानि योग है |

14.07.2021 से 24.09.2021 तक धन प्राप्ति योग है |

20.01.2022 से 14.02.2022 तक पूर्ण सहयोगात्मक योग है |

15.02.2022 से 04.10.2022 तक धन मान हानि योग है |

05.10.2022 से 07.08.2024 तक पूर्ण सहयोगात्मक व कार्य सिद्धि योग है |

08.08.2024 से 07.07.2025 तक कर्म अनुसार फल प्राप्ति योग है |

08.07.2025 से 25.08.2026 तक औसत कार्य सिद्धि एवं कर्म अनुसार फल प्राप्ति योग है |

25.08.2026 से 17.06.2027 तक पूर्ण सहयोगात्मक योग है |

मैंने पूर्व में आपकी आर्डर आईडी : #1055 द्वारा करियर सम्बंधित पूछे गए प्रश्न के उत्तर में जो फलादेश किया था वह आपकी कुंडली का करियर, आय, धन, संपत्ति, सुख, भाग्य आदि समस्त विषयवस्तुओं का पूर्ण रूप से विश्लेषण करने के उपरान्त ही किया था जिसमें आपको करियर में सफलता व उच्च आयामों के साथ साथ धन संपत्ति सुख प्राप्ति के उपाय भी सम्मलित किये गए हैं | अतः आप पूर्व में दिए गए उपायों का ही शांत मन से अनुसरण करें | कम से कम एक वर्ष तक उपायों का निरंतर अनुसरण करने के उपरान्त आपको अपने जीवन स्तर में आये अंतर की स्वमं ही अनुभूति होने लगेगी | कष्ट कम होने लगेंगे व सुख बढ़ने लगेंगे | यदि उपायों का फल मिलने में और भी अधिक समय लगे तो भी निराशावश आप इन उपायों का प्रयोग छोड़े नहीं बल्कि अधिक भक्ति भाव से इन उपायों को निरंतर करते रहे, ऐसा निरंतर करने से आपको जीवन में जो प्राप्त होना है संभवतः, श्रीसिद्धिविनायक जी की कृपा से समय पूर्व व अपेक्षाओं से अधिक प्राप्त हो जायेगा ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है |

विशेष उपाय :-

♦ प्रातः सूर्योदय से पूर्व स्नान आदि से निवृत होकर सूर्य उदय होने से पूर्व, पूर्वमुखी होकर लाल रंग के आसान पर घर की छत्त अथवा खुले स्थान पर बैठ कर सूर्य आदित्य स्तोत्र का पाठ आरम्भ इस प्रकार करें

कि सूर्योदय से पूर्व प्रारम्भ होकर सूर्योदय के पश्चात समाप्त हो | तत्पश्चात लोटे (ताम्बे) के जल में हल्दी व शक्कर डालकर सूर्य को अर्घ दें |

♦ गाय - गुरु - मंदिर की सेवा करें |

♦ गाय को गुड़-चना खिलाते रहे |

♦ गुरु की सेवा करें | बड़े बुजुर्गों की सेवा करें | ईश्वर / ईष्ट देव (हनुमान जी) में ध्यान लगाएं |

♦ मंदिर की साफ़ सफाई में सहायता करें | बृहस्पतिवार को तो अवश्य ही इस कार्य को करें |

♦ सोमवार व शुक्रवार को शिवलिंग पर दूध अथवा दही से अभिषेक करें | इससे आपकी यात्राएं मंगलमय व सफल सिद्ध होंगी |

♦ तन पर सोना अधिक से अधिक धारण करें व सर ढक कर रखें |

♦ घर में कुत्ता पालें व प्यार से उसकी सेवा करें | कुत्ता पाल न सकने की स्थिति में बाहरी कुत्ते की सेवा करें | कभी किसी कुत्ते को मारें अथवा दुत्कारें नहीं |

♦ बुधवार को गाय को हरा चारा खिलाएं |

♦ बुधवार के दिन आठ वर्ष से छोटी कन्या को हरे रंग के वस्त्र, हरे रंग की चूड़ियां आदि उपहार स्वरुप माह में एक बार तो दें ही अथवा क्षमता अनुसार दें |

♦ बुधवार को हिजड़ों को हरी साड़ी अथवा वस्त्र उपहार स्वरुप भेंट में दें व उनसे आशीर्वाद लें | माह में एक बार तो दें ही अथवा क्षमता अनुसार दें |

♦ धन की अधिक हानि होने की स्थिति में किसी गरीब व्यक्ति अथवा बुजुर्ग को काला छाता भेंट स्वरुप दें | ध्यान रहे ऐसा केवल तब करें जब धन की हानि अधिक हो रही हो अन्यथा न करें |

♦ अपने अधीनस्थ व्यक्तियों की सहायता करें व उनसे कुशल व्यवहार रखें | उनसे गलती होने पर अविलम्भ बिना मांगे भी उन्हें क्षमा प्रदान करें | किसी को सताएं नहीं |

♦ कनिष्ठा अंगुली का नाखून बढ़ाएं जिससे कि कनिष्ठा, अनामिका के ऊपरी वाले पोर के मध्य तक पहुँच जाए | इसे मध्य से उप्पर न जाने दें |

♦ भाषा का उचित प्रयोग करें किसी को अपशब्द न बोलें |

♦ केसर का पतला व लम्बा तिलक सदैव लगाएं जो नाक से प्रारम्भ होकर माथे के उप्पर तक जाए | ऐसा करने से आपने अभी तक जो जीवन में स्ट्रगल व मेहनत की हैं व कर रहे हैं उसके मीठे फल आने वाले समय में आपको प्राप्त होना प्रारम्भ हो जायेंगे |

रत्न निर्धारण :-

आपके प्रश्न अनुसार आपकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आपको पन्ना, हीरा एवं नीलम धारण करने का परामर्श किया जाता है |

पन्ना रत्न धारण विधि :-

बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न पन्ना अथवा एमराल्ड को धारण करने के लिए सर्वप्रथम प्रश्न उपजता है कि कितने भार अथवा रत्ती का पन्ना धारण किया जाना उपयुक्त रहेगा ? इसके लिए सर्वप्रथम अपना वजन ज्ञात कर लें | अपने वजन के दसवें भाग के भार बराबर रत्ती का शुद्ध एवं ओरिजिनल पन्ना स्वर्ण अथवा चाँदी की अंगूठी में जड़वाएं | मान लीजिये आपका वजन 70 किलो ग्राम है तब आपको सवा सात रत्ती का पन्ना रत्न धारण करना उपयुक्त रहेगा |

किसी भी शुक्ल पक्ष के बुधवार को सूर्य उदय होने के पश्चात् इसकी प्राण प्रतिष्ठा करें | अंगूठी के शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करने हेतु सबसे पहले अंगूठी को पंचामृत अर्थात दूध, गंगाजल, शहद, घी और शक्कर के घोल में डाल दें, फिर पांच अगरबत्ती बुध देव के नाम जलाए और प्रार्थना करे कि हे बुध देव मै आपका आशीर्वाद (अथवा जो भी मनोकामना हो बोलें) प्राप्त करने हेतु आपका प्रतिनिधि रत्न पन्ना धारण कर रहा हूँ कृपया करके मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करे | तत्पश्चात अंगूठी को पंचामृत से निकालकर 108 बारी अगरबत्ती के ऊपर से घुमाते हुए "ऊँ बुं बुधाय नमः" मंत्र का जाप करे तत्पश्चात अंगूठी को विष्णु जी के चरणों से स्पर्श कराकर कनिष्ठ अंगुली में धारण करें | पन्ना धारण करने के 30 दिनों में प्रभाव देना आरम्भ कर देता है | निरंतर लाभ प्राप्ति हेतु, प्रत्येक तीन वर्षों के अंतराल के पश्चात इसका उक्त विधि द्वारा शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करते रहें |

हीरा रत्न धारण विधि :-

हीरा शुक्र गृह का प्रतिनिधि रत्न है | हीरे को चाँदी अथवा प्लैटिनम की अंगूठी में जड़वाकर शुक्रवार के दिन, सूर्य उदय होने के पश्चात् इसकी प्राण प्रतिष्ठा करें | अंगूठी के शुद्धिकरण एवं प्राण प्रतिष्ठा करने हेतु सबसे पहले अंगूठी को पंचामृत अर्थात दूध, गंगाजल, शहद, घी और शक्कर के घोल में डाल दें, फिर पांच अगरबत्ती शुक्रदेव के नाम जलाये और प्रार्थना करे कि हे शुक्र देव मै आपका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आपका प्रतिनिधि रत्न, हीरा धारण कर रहा हूँ, कृपया करके मुझे आशीर्वाद प्रदान करे | तत्पश्चात अंगूठी को पंचामृत से निकाल कर "ॐ शं शुक्राय नमः" मंत्र के 108 जप करते हुए अंगूठी को अगरबत्ती के उप्पर से 108 बार घुमाए व अंगूठी को लक्ष्मीजी के चरणों से लगाकर अनामिका ऊँगली में धारण करें | हीरा अपना प्रभाव 25 दिन में देना आरम्भ कर देता है |

नीलम रत्न धारण विधि :-

नीलम अथवा ब्लू सफायर रत्न को धारण करने के लिए सर्वप्रथम प्रश्न उपजता है कि कितने भार अथवा रत्ती का नीलम रत्न धारण किया जाना उपयुक्त रहेगा ? इसके लिए सर्वप्रथम अपना वजन ज्ञात कर लें | अपने वजन के दसवें भाग के भार बराबर रत्ती का शुद्ध एवं ओरिजिनल नीलम स्वर्ण या पांच धातु की अंगूठी में जड़वाएं | किसी शुक्ल पक्ष के प्रथम शनि वार को सूर्य उदय के पश्चात अंगूठी की प्राण प्रतिष्ठा करे | इसके लिए अंगूठी को सबसे पहले पंचामृत अर्थात गंगा जल, दूध, घी, केसर एवं शहद के घोल में 15 से 20 मिनट तक डाल के रखे, तत्पश्चात स्नान के पश्चात किसी भी मंदिर में शनि देव के नाम 5 अगरबत्ती जलाये, अब अंगूठी को घोल से निकाल कर गंगा जल से धो ले, अंगूठी को धोने के पश्चात उसे 11 बारी "ॐ शं शानिश्चार्ये नम:" मन्त्र का जाप करते हुए अगरबत्ती के उपर से घुमाये, तत्पश्चात अंगूठी को शिव के चरणों में रख दे एवं प्रार्थना करे कि "हे शनि देव में आपका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आपका प्रतिनिधि रत्न धारण कर रहा हूँ कृपा कर मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करे" तत्पश्चात अंगूठी को शिव जी के चरणों से स्पर्श कराएं व मध्यमा ऊँगली में धारण करे |

नोट :- रत्न अच्छी क्वालिटी का व दोषमुक्त ही धारण करना उत्तम फलदाई होता है | दोषयुक्त व नकली रत्न विपरीत प्रभाव भी दे देते हैं | रत्न समय के साथ धीरे-धीरे व एक-एक कर धारण करते रहें | तुरंत धारण आवश्यक नहीं है, क्यूंकि यह कॉस्टली होते हैं | रत्न विश्वासपात्र व्यक्ति अथवा विश्वसनीय स्थान से ही खरीदें|

ज्योतिषशास्त्र, ज्योतिष में भाग्य से अधिक कर्म को प्रधान मानता हैं एवं हमारे द्वारा प्रदत्त कुंडली विश्लेषण पूर्णतया वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं | जो कुंडली में लिखा हैं वह भाग्य हैं, जो बीत गया उसे ठीक तो नहीं किया जा सकता किन्तु अच्छे कर्मो के माध्यम से हम अपने आने वाले समय को सुखमय व सरल अवश्य ही बना सकते हैं | ज्योतिष अन्धकार से भरे मार्ग पर एक पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करता हैं |

यह भी सत्य है कि ज्योतिष किसी जातक को उसकी सीमा से परे तो नहीं ले जा सकता परन्तु हाँ उस जातक की सीमा के भीतर आ रहे अवरोधों व बाधाओं को दूर करने का मार्ग अवश्य प्रशस्त करता है |

उपायों के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने अथवा असुविधा होने पर ईमेल आईडी care@jyotishshastra.com पर हमें ईमेल करें अथवा 9520039039 पर व्हाट्सऐप करें |

नोट :- साकारात्मक भावना व श्रद्धा से उक्त दिए गए उपायों को करें | उपाय बोझिल मन से कतई न करें |

भगवान श्री गणेश आप एवं आपके परिवार के सदस्यों को सुख, शान्ति, स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्रदान करे |

गुरुदेव संदीप पुलस्त्य

ज्योतिष एवं वास्तु आचार्य

— — — — — — — — — — — —